Review of Research

UGC APPROVED

International Online Multidisciplinary Journal

Volume - 7 | Issue - 11 | August - 2018

Impact Factor : 5.7631(UIF) 2249-894X

महादेवी वर्मा के काव्य मे रहस्यवाद

MAHADEVI VERMA

प्रा.डॉ. मीना जाधव

जवाहर महाविद्यालय, अणदूर

डॉ. मीना जाधव Principal
Jawahar Arts, Science & Commerce College,
Andur Tal. Tuljapur Dist, Osmanabad

सारांश : महादेवी वर्मा को आधुनिक युग की मीरा कहा जाता है स महादेवी का जन्म संवत 1964 मे श्री गोविंदप्रसाद वर्मा के यहाँ फरुखाबाद मे हुआ | ....

Editor - In - Chief - Ashok Yakkaldevi

[illegible]onal Online Multidisciplinary Journal

Review of Research

[illegible] the World

[illegible] Impact Factor : 5.7631(UIF) Vol.- 7, Issue - 11, August-2018

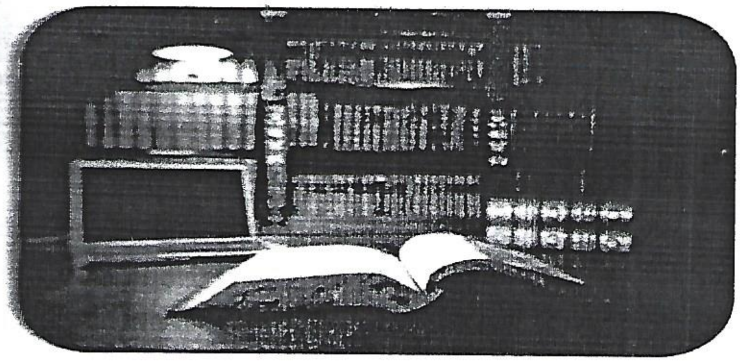

	Title And Name Of The Author (S)	Page No
[illegible]	[illegible]G SKILLS WITH EDUCATION: A QUALITATIVE ANALYSIS [illegible]mmed K. V.	1
[illegible]	[illegible] वर्मा के काव्य मे रहस्यवाद [illegible] डॉ मीना जाधव	4
[illegible]	[illegible]'S ROLE IN INCLUSIVE EDUCATION [illegible] Hoque	9
[illegible]	[illegible] EDUCATION, CIVILIZING MISSION AND NATIVE REACTION [illegible] Karmveer Telgote	12
[illegible]	[illegible] BASED TEACHING APPROACH IN SCIENCE - A NEW PARADIGM OF [illegible] [illegible] A. and Prof. G. Singaravelu	18
[illegible]	[illegible] OF SIMPLIFIED KUNDALINI YOGA ON SELECTED PSYCHOLOGICAL [illegible] AMONG HIGHER SECONDARY SCHOOL GIRL STUDENTS A. [illegible]malini and Dr. P. Sundaramoorthi	22
[illegible]	[illegible] REALITIES AND DISINTEGRATION OF THE AMERICAN DREAM IN [illegible]NAEL WEST'S *MISS LONELYHEARTS* Dr. E. Srinivas	25

Principal.
Jawahar Arts, Science & Commerce College,
Andur Tal. Tuljapur Dist, Osmanabad

18-19

IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) REVIEW OF RESEARCH UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 7 | ISSUE - 11 | AUGUST - 2018

महादेवी वर्मा के काव्य मे रहस्यवाद

प्रा. डॉ. मीना जाधव
जवाहर महाविद्यालय, अणदूर.

प्रास्ताविक :

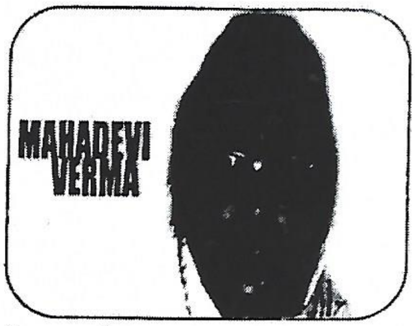

महादेवी वर्मा को आधुनिक युग की मीरा कहा जाता है। महादेवी का जन्म संवत १९६४ मे श्री गोविदप्रसाद वर्मा के यहाँ फरुखाबाद मे हुआ। उनकी माता का नाम हेमरानी देवी था। उनके पिता विभिन्न विद्यालयो मे मुख्याध्यापक रहे। बावजूद इसके महादेवी की शिक्षा केवल छटी कक्षा तक होने के बाद केवल नौ वर्ष की आयु मे उनका विवाह डॉ. स्वरुप नारायण के साथ कर दिया गया। उनहा वैवाहिक जीवन अल्प ही रहा उन्होंने संघर्षो का सामना करते हुए अपनी अधूरी शिक्षा को पूर्ण किया। उन्होंने एम.ए. संस्कृत तक शिक्षा प्राप्त की। साथ ही दर्शनशास्त्र का भी अध्ययन किया और आजीवन साहित्य साधना की। आप विख्यात ' चॉद ' पत्रिका की संपादिका रही। साहित्यकारों के हित मे आपने प्रयाग मे साहित्यकार संसद की स्थापना की जो साहित्यकारों को रचना प्रकाशन मे सहयोग देती थी।

महादेवी को प्रमुखत: छायावादी कवियित्री के रुप मे जाना जाता है। उनके काव्य की विशेषता उनका रहस्यवादी स्वर रहा है। महादेवी ने गद्य भी लिखा है। उनके प्रमुख काव्य ग्रंथ है - नीहार, रश्मि, नीरजा,यामा, सान्ध्य गीत, सप्तपर्णा, दीप शिखा, आधुनिक कवि (साहित्य सम्मेलन प्रयाग के रचनाकारो की श्रृंखला मे)। उनके प्रमुख संस्मरण एवं रेखा चित्र-अतीत के चल चित्र, स्मृती की रेखाऐं पथ के साथी, क्षणदा। आलोचना एवं निबंन्ध के अंतर्गत् हिंदी के विवेचनात्मक गद्य, साहित्यकार की आस्था एवं अन्य निबन्ध। अनुवाद - ऋगवेद की रचनाऐं एवं नारी साहित्य मे श्रृंखला की कडियॉ, प्रमुख कृति है। उन्हे उनकी कृति ' नीरजा ' पर ' संक्सरिया पारितोषिक ' तो ' यामा ' पर ' मंगला प्रसाद ' एवं ' ज्ञानपीठ पुरस्कार ' देकर सम्मानित किया गया।

महादेवी वर्मा के काव्य मे छायावारी कविर्यो के समान ही असीम सत्ता के प्रति जिज्ञासा और कुतुहल का भाव दिखाई देता है। यह रहस्य की भावना प्राचीन रहस्यवाद से भिन्न है। छायावारी रहस्यवाद को परिभाषित करने का प्रयास अनेक आलोचको ने किंया है :- आचार्य शुक्ल के अनुसार - ' दर्शनशास्त्र मे जो अंव्दैतवाद है वही भावना साहित्य के क्षेत्र मे रहस्यावाद है .... जहा कवि उस अनन्त और अज्ञात प्रियतम को आलम्बन बनाकर अत्यंत चित्रमयी भाषा मे प्रेम की अनेक प्राकर से व्यंजना करता है......। अर्थात रहस्यवाद मे कवि कल्पना और भाव के मधुर प्रयत्न से निराकार को साकार बनाकर उसके साथ रागमय सम्बन्ध स्थापित कर लेता है। यह रागात्मक सम्बन्ध ही ब्रहम से विरह,मिलनकी आकांक्षा, आत्मसंमर्पण के भाव को चित्रमयी भाषा मे, रुपक-प्रतिको के माध्यम से व्यक्त करता है। डॉ. रामकुमार वर्मा रहस्यवाद को परिभाषित करते हुए कहते है, जिसमे वह दिव्य और अलौकिक शक्ति से अपना शांत और निश्च्छल सम्बन्ध जोडना चाहती है और यह सम्बंध यहॉ तक बढ जाता है कि दोनों मे कुछ भी अंतर नही रहता, महादेवी स्वयं रहस्यवाद के संदर्भ मे ' यामा ' मे अपनी बात रखते हुए कहती है - उसने पराविद्या की अपार्थिवता ली, वेदान्त के अव्दैतवाद की छाया मात्र ग्रहण की, लौकिक प्रेम से तीव्रता

Principal
Jawahar Arts, Science & Commerce College,
Andur Tal. Tuljapur Dist, Osmanabad

उधार ली और इन सबको कबीर के सांकेतिक दाम्पत्य-भाव-सुत्र मे बांधकर एक निराले स्नेह सम्बंध की सृष्टि कर डाली जो मनुष्य के -ह्दय कों आलम्बन दे सका, उसे पार्थिव प्रेम से उपर उठा सका तथा मस्तिष्क के ह्दयमय और -ह्दय को मस्तिष्कमय बना सका । महादेवी के रहस्यवाद का मूल उत्स उपनिषदों मे है। उन्होने स्वयं कहा है कि 'रहस्यवाद मे जो प्रवृतियो मिलती है उन सबके मूल रुप हमे उपनिषदों की विचारधारा मे मिल जाते है।' महादेवी ने रहस्यवाद के जिस रुप को ग्रहण किया है वह परम्परा से आती विभिन्न विचारधारोओ की विशेषताओं और उपनिषदों की विचारधारा मे समृध्द है।

रहस्यवाद के साधनात्मक एवं भावनात्मक दो प्रकार स्वीकार किये गये है। आधनित युग के अनुरुप साधनात्मक रहस्यवाद नही है। लेकिन ऐसा भी नही है कि आध्यात्मिकता को स्थान ही नही है। जिस प्रकार संत और सूफि साहित्य मे हठयोग आदि का वर्णन मिलता है वैसा वर्णन आधुनिक युग मे नही है। रहस्यवाद का भावनात्मक रुप ही छायावाद मे दिखाई देता है। जिसमे भावना के आधार पर उस अनाम, चिर सुंदर को प्रत्यक्ष कर दिया गया है, अर्थात महादेवीर वर्मा भावनात्मक रहस्यवाद की कवियित्री है। महादेवी के काव्य मे व्देत और अव्दैत दोनो की झलक मिलती है क्योंकि उनका काव्य प्रणय काव्य है जिसमे के दो पक्ष प्रेमी और प्रेमिका का होना स्वाभाविक एंव आवश्यक है। मध्येयुगीन सुफी और संतो के रहस्यवादी काव्य मे भी वह विद्यमान है।

महादवी के काव्य मे ब्रहम,जीव,जगत तथा उनके पास्पारिक सम्बन्धों से सम्बन्ध अनेक विचारों पर उपनिषदो का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। ऐतरेय उपनिषद का विचार कि ब्रहम आदि मे अपने मौन शयन मे अकेला था महादेवी के काव्य मे इस प्रार व्यक्त हुआ है -

न थे जब परिवर्तन दिन रात
नहीं आलोक-मिमिर थे ज्ञात
- - - - - -
एक कम्पन थी एक हिलोर ।

उपनिषदो मे व्यक्त भावना 'एकोडहं बहुस्याम' अर्थात एक से अनेक हों की ब्रम्हेच्छा से सृष्टि का निर्माण हुआ। इसी भावना को इस पद मे देखा जा सकता है -

हुआ यों सुनेपन का भान
-- --- --- ---
और किस शिल्पी ने अनजान
विश्व-प्रतिम कर दी निर्माण

उपनिषदों मे ब्रहम को मूल, अविकारी माना है और परिवर्तनकारी भी माना है। 'रसो वै स : अर्थात वह रस है। तथा 'एकाशेन स्थिती जगत' अर्थात मै (ब्रहम) इस संपूर्ण जगत को अपनी योग शक्ति के एक अंश मात्र से धारण करके स्थित हूँ आदि विचार महादेवी के काव्य में कुछ इस प्राकर आयी है -

Principal
Jawahar Arts, Science & Commerce College,
Andur Tal. Tuljapur Dist, Osmanabad

उसी नभ साक्या वह अविकार
और परिवर्तन का आधार
पुलक से उठ जिसमे सुकुमार
लीन होते असंख्य संसार

महादेवी ब्रहम की कल्पना मधुर भाव से की है और उन्हे सगुण साकार के समान ही अनेक गुणो से सुशोभित किया है उनका साध्य केवल प्रेम पात्र ही नही है वह प्रेममयम भी है। वह प्रेमलीला का साक्षी भी है और उस लीला मे अभिनय भी करता है। वह आकृष्ट भी होता है और आकर्षित भी करता है और मौन निमंत्रण भी देता है यथा –

आज किसी के मसले तारों की वह दुरागात झंकार
मुझे बुलाती है सहमीसी झझाके परदोंके पार

उपनिषदो मे कहा गया है - ' इहैवान्त ' : शरीरे सौम्य स पुरुष : अर्थात ब्रहम इसी शरीर मे वास करता है। उसे अन्यत्र कही खोजने की आवश्यकता नही। महादेवी इसी भाव को शब्दबध्द करती है –

अली कहाँ संदेश भेजू ?
मै किसे संदेश भेजू ?

महादेवी के काव्यमे जीव या आत्मा के सम्बन्ध मे जो विचार व्यक्त होते है उनमे भी उपनिषदों की छाया दिखाई देती है तो कही उनके मौलिक विचार दृष्टिगत होते है। उनकी इन काव्य पंक्तियो को देखे –

मै तुमसे हूँ एक : एक है जैसे रश्मि प्रकाश
मै तुमसे हुँ भिन्न-भिन्न ज्यों घन से तडित-विलास

इन पक्तियों मे ' सोडह ' या 'तत्वमसि' का औपनेषदिक विचार स्पष्ट दिखाई देता है। इसी प्रकार वे कहती है –

' बिन भी हुँ मै तुम्हारी रागिनी भी हूँ।

महादेवी अपने मौलिक चितन को प्रस्तुत करते हुए परमात्मा के समान ही आत्मा की महत्ता को भी बतलाती है जितना अलबेला परमात्मा है इतनी ही मतवाली आत्मा भी है भले जीव देह पाकर अपने महान रुप को खो दे लेकिन इससे उसका महत्व कम नही हो जाता वे कह उठती –

क्यों रहोगे क्षुद्र प्राणो मे नही
क्या तुम्हीं सर्वेश एक महान हो ?

Principal
Jawahar Arts, Science & Commerce College,
Andur Tal. Tuljapur Dist. Osmanabad

संतो और सूफियों के समान ही उनकी भी आत्मा और परमात्मा के सम्बंध मे धारणा है। इस जगत का निर्माण ब्रहम ही से है। उसी से सृष्टी और उसी मे उसका लय है। जिस प्रकार पानी का बुलबुला पानी मे उत्पन्न हो कर उसी में विलीन हो जाता है उनके शब्द है - ' उसी मे आदि वही अवसान '

माया को अव्दैतवादियो ने महाठगिनी माना है। माया की आवरण और विक्षेप दो शक्तियां मानी गयी है। आवरण के कारण ब्रम्ह अपने वास्तविक स्वरुप को जगत मे विलीन कर लुप्त हो जाता है और विक्षेप के कारण जीव स्वयं के शुध्द स्वरुप को भूल कर ब्रहम से अलग मान कर सांसारिक माया-मोह और वासनाओं मे बंध जाता है। लेकिन जीव जब माया के चंगुल से बाहर निकलता है तो उसकी स्थिती बदल जाती है। वह अपने मुल स्वरुप को जान लेता है -

नचाता मायावी संसार
लुभा जाता सपनों का हास
मानते विष को संजीवन
मुग्ध मेरे भुले जीवन

महादेवी अपने दार्शनिक विचारों को मनौवज्ञानिक आधार देने का प्रयास करती है। माया को वो एक ऐसी मानसिक स्थिती मानती है जब जीव अहं या ममत्व से अभिभूत होता है और जब अहं से मुक्त हो जीव अपना उदात्तीकरण कर लेता है तो माया के बंधन से भी मुक्त हो जाता है।

रहस्यानुभूति की पांच अवस्थाऐं मानी गयी है - जिज्ञासा, आस्था, अव्दैतभावना, विरहानुभुति एवं मिलन की अनुभुति। साधक आत्मा इन पांच अवस्थाओं से गुजर कर अपने साध्य तक पहुँचता है। महादेवी के काव्य मे भी यह जिज्ञासा दिखायी देती है। वे प्रश्नाकूल हो कहती है - ' मिटाता रंगता बारम्बार, कौन यह जग का चित्राधार ' यह जिज्ञासा ही उन्हे सोचने पर बाध्य करती है कि —

कौन तुम मेरे -हदय मे
कौन मेरी कसक मे नित मधुरता भरता अलक्षित ?

जिज्ञासा का शमन होते ही विराटता को व्यक्त करते हुए कहती है —

रवि-शशि तेरे अवंतस लोक
सीमन्त जटील तारक अमोल

उन्हे प्रकृति के प्रत्येक पदार्थ मे प्रिय की झलक मिलते लगती है। उषा की लालिमा मे उसे प्रिय का सौंदर्य और सूर्य की प्रथम किरण मे उस सत्ता का आभास दिखायी देता है उषा के छु आरक्त कपोल किलक पडता तेरा उन्माद ' जैसे जैसे परमात्मा मे आस्था प्रबल होती है वैसे वैसे अव्दैतभाव जागृत होने लगता है। कवि उस परम तत्व से अपना संबंध जोडने लगता है। यह संबंध दाम्पत्य के मधुर रुप मे प्रकट होता है। जीव परमात्मा को प्रियतम के रुप मे स्वीकार करता है —

Principal
Jawahar Arts, Science & Commerce College,
Andur Tal. Tuljapur Dist, Osmanabad

प्रिय चिरंतन है सजनि
क्षण क्षण नविन सुहागिनी में
सखी। या मै हूँ अमर सुहागभरी
प्रिय के अनंत अनुरागभरी

अव्दैत का भाव विरहानुभुति को तीव्र बना देता है। महादेवी का काव्य इसी विरह से आप्लावित है। वे आर्त स्वर मे पुकार उठती है –

जो तुम आ जाते एक बार
कितनी करुणा कितने संदेश
पथ मे बिछ जाते बन पराग
गाता प्राणों का तार-तार
अनुराग भरा उन्माद राग
आंसू लेते वे पद पखार

लेकिन अंत मे उन्हे विरह से ही लगाव हो जाता है विरह बना आराध्य, व्दैत क्या कैसी बाधा. ' यह विरह इतना प्रिय लगने लगता है किं वे कहने लगती है ' मिलन का मत नाम ले मै विरह में चिर हूँ ' रहस्यवाद मे साधक का साध्य में मानसिक दृष्टि से लीन होना ही मिलन है। लेकिन इस मिलन की बेला के लिए वियोग के अग्निपथ पर चल कर आत्मसमर्पण करना होता है। तब कही मधुमिलन का यह सुअवसर प्राप्त होता है । पर महादेवी का अभीप्सित यह नही है। वे तुम मुझ मे प्रिय फिर परिचय क्या ? कहकर रहस्य भावना के अंतिम सोपान तक पहूँचती है। महादेवी की रहस्यभावना उनकी काव्य साधाना के साथ विकसित हुयी है। उनका रहस्यवाद मध्ययुगीत रहस्यवाद से निश्चित ही भिन्न है। न वे किसी संप्रदाय से प्रभावित है न गहन साधनात्मक रहस्यवाद की बात करती है। वे तो सीधे-सीधे आत्मनिवदेन करती है। वे विशुध्द काव्य की सर्जना करती है। बुध्दितत्व की अपेक्षा ह्दय तत्व को अधिक महत्वपूर्ण मानती है - ' कला सत्य को ज्ञान के सिकता-विस्तार में नही खोजती, अनुभुति की सरिता के तट से एक बिन्दु पर ग्रहण करती है। ' डॉ. गणपतिचन्द्र गुप्त महादेवी की रहस्यानुभुति के संदर्भ में कहते है - रहस्यानुभूति भावावेश की आंधी नही वरन ज्ञान के अनंत आकाश के नीचे अजस्त्र प्रवाहमयी त्रिवेणी है, इसी से हमारे तत्व दर्शक बौध्दिक तथ्य को ह्दय का सत्य बना सके। निहार से लेकर दीपशिखा तक उनकी रहस्यानुभूती की विकास यात्रा देखने को मिलती है। अनकी रहस्यभावना अपनी अंतिम अवस्था तक पहुंचते पहुंचते अपने अहं को उस उदात्त स्थिती मे पहूँचा देती है जहॉ अनकी एकांत साधना, अदम्य आत्मविश्वास, अटूट धैर्य मे मुखरित हो कह उठता है -

पंथ रहने दो अपरिचित प्राण रहने दो अकेला
पंथ रहने दो अपरिचित प्राण रहने दो अकेला........

Principal
Jawahar Arts, Science & Commerce College,
Andur Tal. Tuljapur Dist, Osmanabad